International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

मध्ययुगीन पाश्चात्य दर्शन में ईश्वर विचार

डॉ. श्री भगवान
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

1. सन्त ऑगस्टाइन (354–430 ई.)

ग्रीक दर्शन का बाइबिल के धर्म से जब समागम हुआ तो धीरे–धीरे स्वतन्त्रा दर्शन सर्वथा लुप्त होकर केवल धार्मिक विषयों में जितने दर्शन की अपेक्षा है, उतना ख्रीष्ट मत के प्रचारक ऑगस्टाइन आदि को के उपदेशों में सुरक्षित रहा।[1]

आरलिया ऑगस्टाइन (354–430 ई.) का जन्म अफ्रीका में हुआ था। माता ईसाई थी। याद्व मसीह ने लिखा है – ''संत ऑगस्टाइन विशेषकर ईसाई धर्म दार्शनिक थे, पर अपने यूनानीदर्शन की मदद से ईसाइयत को स्पष्ट कर पाएट्ट।[2] 386 ई. में ऑगस्टाइन अफ्रीका के हिप्पो नगर में धर्म नेता (Bishop) बनाए गए तथा मृत्यु तक इसी पद पर बने रहे।[3]

ईश्वर विचार (Concept of God)

ऑगस्टाइन के अनुसार ईश्वर नित्य, अनुभवातीत, सर्वशक्तिमान, परम, शुभ, निरपेक्ष, संकल्प एवं बुद्धि है। यह पूर्णतया स्वतन्त्रा है। वह आकाश की तरह सब जगह उपस्थित होकर भी आकाश से सीमित नहीं है। वह परम पवित्रा है, इसलिए बुराई का स्रष्टा नहीं है। वह सर्वशक्तिमान है जिसके कारण जगत् की अन्य कोई शक्ति उसके कार्यों पर नियंत्राण नहीं कर सकती है।

ईश्वर सत्य है, इसलिए एक दृष्टि से वह प्रत्येक मनुष्य में निवास करता है। वह नित्य सत्ता है, इसलिए मनुष्य से भी परे है। ईश्वर का वर्णन निषेधात्मक रूप से किया जा सकता है। ईश्वर विशु एवं परिवर्तनहीन है। वह दिव्य एवं काल से परे है। ईश्वर से मनस् को प्रकाश एवं संकल्प की शक्ति प्राप्त होती है। जगत् की समस्त वस्तुएट्ट ईश्वर के नित्य विचारों के अनित्य प्रतिरूप हैं।[4] ''ईश्वर :शाश्वतं.... असृज्यन्त।''[5]

2. जॉन स्कॉटस एरीजोना (810-877)

इनके मत से विवेक अर्थात् ज्ञान और धर्म या भक्ति एक है। जिस बात का ग्रहण भक्ति से स्वंय होता है, उसी का प्रमाण ज्ञान से दिया जाता है। विवेक शक्ति सब मनुष्यों में एकरूप ईश्वर ने दी है। समस्त पदार्थों के इन्होंने चार विभाग किए है –

1. अकार्य कारण
2. कार्य कारण
3. कार्य अकारण
4. अकार्य अकारण[6]

ईश्वर विचार (Concept of God)

एरीजोना के अनुसार ईश्वर कार्य नहीं है, पर सबका कारण है। बुद्धि प्राण सुख आदि ईश्वर के कार्य है और वे स्वयं भी समस्त अन्य वस्तुओं के कारण है। पृथक् व्यक्ति केवल कार्य है, कारण नहीं। पिफर समस्त संसार जहाट्ट लौट जाता है, वह ईश्वर न कार्य है न कारण। इस प्रकार यह देखा जाता है प्रथम और चतुर्थ दोनों ही एक वस्तु है। सृष्टि कार्य को देखा जाए तो ईश्वर प्रथम अर्थात् अकार्य कारण है और लय देखा जाए तो अकार्य अकारण है।

दुःख कोई वस्तु नहीं है, सुख के अभाव को दुःख कहते हैं। ईश्वर से वैमुख्य के कारण मनुष्य

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

की आत्मा दुःख में पड़ी है। ईश्वर के ज्ञान से बढ़कर धर्म नहीं है। ईश्वर का ज्ञान होने से ही मनुष्य की गति हो जाती है। ईश्वर के यहाट्ट पहुट्टचने पर मनुष्य की आत्मा ईश्वर में मिल नहीं जाती है, केवल पूर्ण ज्ञानमय होकर सुखी हो जाती है।[7] सिद्धि

3. सन्त एन्सेल्म (1035–1109 ई.)

एरिजोना के बाद विरेंगर विलियम आदि बहुतेरे दार्शनिक हुए, परन्तु इन सबों में नए विचारवाला एन्सेल्म था, जिसके दर्शन का प्रभाव यूरोप के दर्शन पर बड़ा भारी है। लोम्बार्डी के एक अच्छे वंश में एन्सेल्म का जन्म हुआ। यूरोप की प्राचीन धर्म पुस्तकों में जो तत्व दिये हैं, उनको शुद्ध युक्तियों से उपपादन करना इसका मुख्य उद्देश्य था।[8]

ईश्वर विचार (Concept of God)

प्लेटो ने जैसा दिखलाया है कि सामान्य प्रत्यय वास्तव है, उसी के रहने से व्यक्तियों की स्थिति है, वैसा ही एन्सेल्स ने भी दिखाया है। जैसे सब गोव्यक्तियों में वर्तमान एक गोत्त्व है पिफर गो–महिष आदि में पशुत्व है, वैसे ही जाते–जाते सब से बड़ी जो सामान्य अर्थात् पूरी सत्ता है, वही ईश्वर है।[9] जितना कार्य है, उसका कारण अवश्य होता है। यह कारण एक हो सकता है या अनेक। यदि एक है तो ईश्वर सिद्धि हुआ। यदि अनेक है तो तीन विकल्प हो सकते हैं। इन अनेक कारणों का यदि फ्रिफर एक कोई कारण है तो ईश्वर की सिद्धि हुई या सब अनेक कारण स्वयं भू हों, तो इनमें जो स्वयं होने की शक्ति है, यह शक्ति एक हुई और यही ईश्वरवादियों का ईश्वर है। तीसरा विकल्प यह हो सकता है कि अनेक कारण परस्पराधीन हो, पर इस पक्ष में अन्योन्याश्रय दोष पड़ता है, इसलिए एक ईश्वर सब जगत् का कारण है, यह सिद्धि हुआ। यह ईश्वर स्वंय भू, पारमार्थिक, परासक्त एवं पराशक्ति है। ईश्वर की सत्ता का मुख्य प्रमाण एन्सेल्म ने इस प्रकार दिया है। पूर्ण परमेश्वर का बोध मनुष्य को है तो यदि ईश्वर असत् है तो उसमें अपूर्णता आई। इसलिए पूर्ण ईश्वर की सत्ता अवश्य है। इसी प्रमाण को Ontological argument कहते हैं।

4. सन्त थॉमस एक्विनस (1225–1274)

इनका जन्म एक्विनी नामक एक छोटे से नगर में हुआ था। इनकी विलक्षण प्रतिभा के कारण समकालीन विचारक इन्हें 'दैवीय डॉक्टर' (Angelic Doctor) कहा करते थे। ये केथोलिक सम्प्रदाय के डोमिनियन[10] शाखा के पादरी बने। इन्होंने अरस्तू के दर्शन का अध्ययन करके इसे अपने धर्म दर्शन का मुख्य आधार बनाया।[11]

ईश्वर विचार (Concept of God)

सन्त थॉमस एक्विनस के अनुसार ईश्वर विशुद्ध आकार रूप है। ईश्वर विषयक ज्ञान आस्था पर आधारित है, फ्रिफर भी तर्कों के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व की चर्चा की जा सकती है। इनके 'सुमा' नामक दोनों ग्रन्थों का प्रथम उद्देश्य ईश्वर के अस्तित्व की स्थापना और उसके स्वरूप का निरूपण करना है।

ईश्वर सिद्धि में पाट्टच तर्क

1. इस संसार की प्रत्येक वस्तु गतिशील है। वस्तुओं में यह गति स्वयं के द्वारा न होकर अन्य किसी चालित सत्ता पर निर्भर करती है। वह सत्ता जो अपने अस्तित्व के लिए किसी अन्य की मदद नहीं चाहता, वही ईश्वर है।
2. संसार की प्रत्येक वस्तु का कोई कारण होता है। जगत् में निमित्त कारणों की एक सत्ता पाई जाती है। वह आद्य कारण (First Cause) ईश्वर ही है क्योंकि वह कार्य कारण श्रृंखला से मुक्त है।
3. एक्विनस ने तीसरा तर्क पूर्णता की मात्राओं के आधार पर दिया है। संसार की वस्तुओं में पूर्णता का एक क्रम है। कोई वस्तु कम मात्राा में पूर्ण है और कोई अधिक मात्राा में पूर्ण है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

प्रत्येक वस्तु का आदिकारण होता है इसलिए आदिकारण को पूर्ण होना चाहिए। वह ईश्वर है जो संसार की समस्त वस्तुओं का पूर्ण कारण है। ऐसा तर्क भारतीय दर्शन में योग दर्शन में ईश्वर प्रमाण के लिए दिया गया है।

4. जब हम इस सृष्टि की ओर दृष्टिपात करते है तो प्रत्येक वस्तु का एक प्रयोजन है। एक प्रयोजन पूर्ण विश्व का होना एक महान प्रयोजक ईश्वर की सत्ता को सिद्धि करता है।

5. निमित्त कारण के आधार पर भी ईश्वर का अस्तित्व सिद्धि है। प्रत्येक कार्य में निमित्त कारण के बिना उपादान कारण को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। जिस प्रकार मूर्ति का निमित्त कारण मूर्तिकार होता है। इसी प्रकार संसार के प्रत्येक कार्य के पीछे निमित्त कारण है। इस कार्य कारण की श्रृंखला के अन्त में एक ऐसे निमित्त कारण की आवश्यकता है जो समस्त संसार का आदि कारण हो, वह ईश्वर ही है।

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि ईश्वर के अस्तित्व को सिद्धि करने के लिए एक्विनस के उपर्युक्ता पाट्टच तर्क दिए। इन प्रमाणों के आधार पर केवल यह कहा जा सकता है कि ईश्वर है, न कि वह क्या है ? इस सन्दर्भ में जानकारी नहीं मिलती।[12]

1. ईश्वर अपरिवर्तनशील, नित्य, सृष्टिकर्त्ता, शिवं और सर्वोच्च बुद्धिमान है क्योंकि वह विश्व का निर्माता है।
2. उसने शून्य से इस जगत् की रचना की है।
3. विशुद्ध, सत्तात्मक होने के कारण ईश्वर निरपेक्ष रूप से सरल एवं पूर्ण है। वह निरपेक्ष प्रज्ञा, निरपेक्ष चेतना और निरपेक्ष संकल्प है।[13]
4. ईश्वर की कृति नित्य नियत एक रूप है, उसमें कोई बात अकस्मात् नहीं हो सकती। मनुष्य की इच्छा अच्छी ही वस्तु की ओर जाती है, पर उसकी इन्द्रियाट्ट बुरी वस्तुओं की ओर जाती है, इसी से पाप का आरम्भ होता है और ईश्वर विवेकवान् है इसलिए अज्ञान, अविवेक पक्षपात से कोई कार्य नहीं होता है।[14] एक्विनस अन्तिम मध्ययुगीन पाश्चात्य दार्शनिक था।

संदर्भ सूची

1. यूरोपीय दर्शन – रामावतार शर्मा, पृद्ध 25
2. पाद्ध दद्ध एद्ध विवेद्ध – सोहनराज तातेड़, पृद्ध 11
3. पाश्चात्य दर्शन – रूपाली श्रीवास्तव, पृद्ध 92
4. पाश्चात्य दर्शन – रूपाली श्रीवास्तव, पृद्ध 94
5. पाश्चात्यतत्त्वशास्त्रोतिहास – पुल्लेव श्रीरामचन्द्रः, पृद्ध 232
6. मूलप्रकृतिरविकृति..... पुरूषः, सांख्यकारिका
7. यूरोपीय दर्शन – रामावतार शर्मा, पृद्ध 26
8. यूरोपीय दर्शन – रामावतार शर्मा, पृद्ध 26–27
9. वही, पृद्ध 26–27
10. एक रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय जो 1215 में स्थापित हुआ था।
11. पाश्चात्य दर्शन – रूपाली श्रीवास्तव, पृद्ध 99
12. पाश्चात्य दर्शन – रूपाली श्रीवास्तव, 100–101
13. पाश्चात्य दर्शन – रूपाली श्रीवास्तव, पृद्ध 101
14. यूरोपीय दर्शन – रामावतार शर्मा, 28–29